SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

सिवनी जिले की राजनैतिक यात्रा : प्रारंभ से 1818 तक

संकेत कुमार चौकसे, (Ph.D.), इतिहास विभाग
राजमाता सिंधिया शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, छिंदवाड़ा, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
संकेत कुमार चौकसे, (Ph.D.), इतिहास विभाग
राजमाता सिंधिया शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, छिंदवाड़ा, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 23/05/2022
Revised on : -----
Accepted on : 30/05/2022
Plagiarism : 00% on 23/05/2022

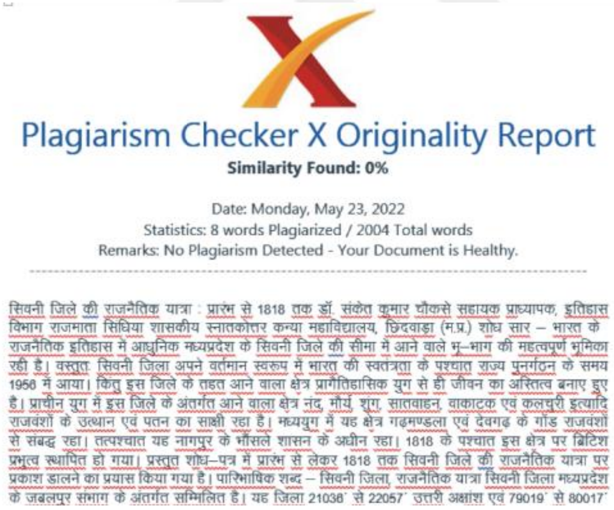
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Monday, May 23, 2022
Statistics: 8 words Plagiarized / 2004 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

सिवनी जिले की राजनैतिक यात्रा : प्रारंभ से 1818 तक डॉ. संकेत कुमार चौकसे सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग राजमाता सिंधिया शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, छिंदवाड़ा (म.प्र.) शोध सार – भारत के राजनैतिक इतिहास में आधुनिक मध्यप्रदेश के सिवनी जिले की सीमा में आने वाले भू–भाग की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वस्तुत: सिवनी जिला अपने वर्तमान स्वरूप में भारत की स्वतंत्रता के पश्चात राज्य पुनर्गठन के समय 1956 में आया। किंतु इस जिले के तहत आने वाला क्षेत्र प्रागैतिहासिक युग से ही जीवन का अस्तित्व बनाए हुए है। प्राचीन युग में इस जिले के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र नंद, मौर्य, शुंग, सातवाहन, वाकाटक एवं कलचुरी इत्यादि राजवंशों के उत्थान एवं पतन का साक्षी रहा है। मध्ययुग में यह क्षेत्र गढ़मण्डला एवं देवगढ़ के गोंड राजवंशों से संबद्ध रहा। तत्पश्चात यह नागपुर के भौंसले शासन के अधीन रहा। 1818 के पश्चात इस क्षेत्र पर ब्रिटिश प्रभुत्व स्थापित हो गया। प्रस्तुत शोध–पत्र में प्रारंभ से लेकर 1818 तक सिवनी जिले की राजनैतिक यात्रा पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। पारिभाषिक शब्द – सिवनी जिला, राजनैतिक यात्रा सिवनी जिला मध्यप्रदेश के जबलपुर संभाग के अंतर्गत सम्मिलित है। यह जिला 21038' से 22057' उत्तरी अक्षांश एवं 79019' से 80017'

शोध सार

भारत के राजनैतिक इतिहास में आधुनिक मध्यप्रदेश के सिवनी जिले की सीमा में आने वाले भू–भाग की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वस्तुतः सिवनी जिला अपने वर्तमान स्वरूप में भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् राज्य पुनर्गठन के समय 1956 में आया। किंतु इस जिले के तहत आने वाला क्षेत्र प्रागैतिहासिक युग से ही जीवन का अस्तित्व बनाए हुए है। प्राचीन युग में इस जिले के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र नंद, मौर्य, शुंग, सातवाहन, वाकाटक एवं कलचुरी इत्यादि राजवंशों के उत्थान एवं पतन का साक्षी रहा है। मध्ययुग में यह क्षेत्र गढ़मण्डला एवं देवगढ़ के गोंड राजवंशों से संबद्ध रहा। तत्पश्चात् यह नागपुर के भौंसले शासन के अधीन रहा। 1818 के पश्चात इस क्षेत्र पर ब्रिटिश प्रभुत्व स्थापित हो गया। प्रस्तुत शोध–पत्र में प्रारंभ से लेकर 1818 तक सिवनी जिले की राजनैतिक यात्रा पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द

सिवनी जिला, राजनैतिक यात्रा.

सिवनी जिला मध्यप्रदेश के जबलपुर संभाग के अंतर्गत सम्मिलित है। यह जिला $21^{0}36'$ से $22^{0}57'$ उत्तरी अक्षांश एवं $79^{0}19'$ से $80^{0}17'$ पूर्वी देशांश के मध्य स्थित है।[1] यह अपने वर्तमान स्वरूप में 1 नवम्बर 1956 को मध्यप्रदेश राज्य के पुनर्गठन के अवसर पर स्थापित किया गया था। जिले के उत्तर में जबलपुर, पश्चिम में छिंदवाड़ा, पूर्व में बालाघाट, उत्तरपूर्व में मण्डला, उत्तर–पश्चिम में नरसिंहपुर एवं दक्षिण में महाराष्ट्र राज्य के नागपुर और भण्डारा जिले स्थित है। यह जिला मूल रूप से जंगलों एवं पर्वतों से युक्त एक जनजातीय बाहुल्य क्षेत्र रहा है। 19वी सदी के सिवनी जिले की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन सर राबर्ट अर्मिटेज स्ट्रेण्डले ने अपनी पुस्तक 'सिवनी कैम्प लाईफ ऑन द सतपुड़ा रैंज' में किया है।[2]

जिले की सीमाओं में प्रवाहित होने वाली प्रमुख ऐतिहासिक नदियां नर्मदा एवं वैनगंगा है।

सिवनी जिले के तहत आने वाला क्षेत्र प्रागैतिहासिक युग से ही जीवन का अस्तित्व बनाए हुए है। 1959–60 में सिवनी जिले में वैनगंगा नदी घाटी में स्थित बंडोल से पूर्व–पाषाणयुगीन उपकरण प्राप्त हुए है।[3] इसी तरह मध्य पाषाणकाल से संबंधित साक्ष्य अलोनिया, कान्हीवाड़ा, छपारा तथा सुआखेड़ा ग्रामों से प्राप्त हुए है।[4] ताम्रपाषाणयुगीन संस्कृति से संबंधित साक्ष्य सिवनी जिले के निकट स्थित बालाघाट के गुंगेरिया नामक स्थल से प्राप्त हुए है।[5] इस जिले के तहत आने वाला भू–भाग पुराणों में वर्णित दण्डकारण्य का वह रमणीय भाग है जो उत्तर भारत को दक्षिण भारत से जोड़ता है। उल्लेखनीय है कि दण्डकारण्य और विदर्भ के मध्य में संभवतः रामगिरि (रामटेक) पर अगस्त्य मुनि ने आश्रम बनाकर निवास किया था। रामटेक सिवनी के दक्षिण में 60 मील की दूरी पर स्थित है।[6] महाभारत काल में सिवनी क्षेत्र महाकान्तार राज्य के अंतर्गत होने की संभावना है जिसे अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर धर्मराज युधिष्ठिर के लघु भ्राता सहदेव ने विजित किया था।[7]

प्राचीन युग में इस जिले के अंतर्गत आने वाला भू–भाग नंद, मौर्य, शुंग, सातवाहन, वाकाटक एवं कलचुरी, राष्ट्रकूट इत्यादि राजवंशों के उत्थान एवं पतन का साक्षी रहा है। मौर्यो के उत्थान के पूर्व आर्यावर्त के विशाल क्षेत्र पर नंदों का शासन था। पौराणिक साक्ष्य के अनुसार प्रथम नंद राजा महापद्मनंद क्षत्रियों का विनाशक (सर्वक्षत्रांतक) तथा पृथ्वी का एकमात्र सम्राट था।[8] इससे प्रतीत होता है कि तात्कालीन समय में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सिवनी क्षेत्र पर भी नंदो का आधिपत्य रहा होगा। चंद्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में कर्नाटक तक विस्तृत था। इस स्थिति में यह असंभव नहीं हैं कि यह क्षेत्र मौर्यों के अधीन रहा हो। अशोक का रूपनाथ (जबलपुर) अभिलेख से यह संभावना और अधिक प्रबल हो जाती है। मौर्य शासन के पश्चात् विदर्भ क्षेत्र क्रमशः शुंग एवं सातवाहन शासकों के प्रभाव क्षेत्र में रहा। इस आधार पर कहा जा सकता है कि सिवनी जिले का अधिकांश क्षेत्र भी शुंग तत्पश्चात् सातवाहन शासकों के अधीनस्थ रहा होगा।

गुप्तकाल–वाकाटक काल में सिवनी क्षेत्र वाकाटक शासकों के प्रभाव क्षेत्र में रहा होगा। पुराणों के अनुसार विंध्यशक्ति इस राजवंश का संस्थापक था, जिसकी राजधानी पुरिका थी, जो विदर्भ से संबद्ध थी। 'हिस्ट्री ऑफ द सेण्ट्रल प्रोविन्सेस एण्ड बरार' के अनुसार वाकाटक वंश का राज्य बरार, खानदेश, सिवनी, बालाघाट, छिंदवाड़ा, बैतूल इत्यादि जिलों में फैला हुआ था।[9] छठी शताब्दी ईसवी के मध्य में इस क्षेत्र में प्रारंभिक कल्चुरी शासकों ने ख्याति अर्जित की। कल्चुरी कला से प्रभावित मूर्तिया सिवनी जिले के घंसौर से प्राप्त होना इस संभावना को पुष्ट करता है कि यह क्षेत्र कल्चुरी शासको के प्रभाव क्षेत्र में रहा होगा।[10] तत्पश्चात् इस क्षेत्र पर क्रमशः राष्ट्रकूट एवं त्रिपुरी के कल्चुरी शासकों का प्रभाव रहा होगा। यद्यपि इसके प्रत्यक्ष प्रमाण उपलब्ध नहीं होते है किंतु निकटवर्ती जिलों से से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर यह अनुमान लगाया जाता है कि सिवनी क्षेत्र राष्ट्रकूट एवं त्रिपुरी के कल्चुरी शासकों के प्रभाव में रहा होगा। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रकूट वंश के साक्ष्य सिवनी के निकटवर्ती जिले छिंदवाड़ा से दक्षिण–पूर्व में लगभग 23 किमी. दूरी पर स्थित नीलकण्ठी ग्राम के जीर्ण–शीर्ण मंदिरों (गूदड़देव) में देखे जा सकते है।[11] इसी प्रकार त्रिपुरी के कल्चुरी राजवंश से संबंधित पुरातात्त्विक साक्ष्य सिवनी के निकटवर्ती जिलों जबलपुर[12] एवं बालाघाट[13] से प्राप्त होते है।

''मध्यप्रदेश एवं विदर्भ क्षेत्र के विशाल भू–भाग पर 13वीं शताब्दी से लेकर 18वीं शताब्दी तक 4 प्रमुख गोंड राज्यों खेरल (बैतूल), गढ़मण्डला (मण्डला), देवगढ़ (छिंदवाड़ा) तथा चंद्रपुर (चांदा) का प्रभुत्व था। इनमें सिवनी जिले का संबंध गढ़–मण्डला एवं देवगढ़ राज्यों से रहा।[14] गढ़–मण्डला के गोंड राजवंश का उत्कर्ष सोलहवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में संग्रामसिंह के समय हुआ। प्रशस्ति के अनुसार उनके राज्य में 52 विख्यात गढ़ थे।[15] इन गढ़ों में से एक गढ़ सिवनी–छपारा के क्षेत्र के अंतर्गत आता था जो चाँवड़ी गढ़ नाम से विख्यात था।[16] वर्तमान में चाँवड़ी सिवनी नगर से दक्षिणी सीमा पर लगभग सात किमी. की दूरी पर स्थित एक छोटा सा ग्राम है। संग्रामशाह के बाद उसका पुत्र दलपतशाह शासक बना। 1548 में उसकी आकस्मिक मृत्यु के बाद उनकी विधवा रानी दुर्गावती ने 16 वर्ष तक राज्य का सफल संचालन किया तथा उन्होंने अपनी सीमा के भीतर अपनी सत्ता को शक्तिशाली बनाया। बाजबहादुर के सफल प्रतिरोध से उनकी शक्ति सिद्ध होती है, जिसका उल्लेख अबुल फजल ने भी किया है।[17]

अकबर के शासनकाल में कड़ा–मानिकपुर के गवर्नर आसफ खां ने 1564 में एक विशाल सेना सहित गढ़ा पर विजय प्राप्त करने हेतु आक्रमण कर दिया। रानी दुर्गावती युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुई।[18] इस प्रकार गोंडवाना राज्य मुगलों के अधीन हो गया किन्तु इसका शासन राजगोंड शासकों के हाथों में ही रहा।[19] 1691 से 1731 तक गढ़–मण्डला का शासन नरेन्द्रशाह के द्वारा संचालित किया गया। उसके समय हुए गृहयुद्ध का लाभ उठाकर चाँवड़ी गढ़ (परगना) के जागीरदार लुण्डेखां ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया।[20] अतएव नरेन्द्रशाह ने देवगढ़ के गोंड राजा बख्तबुलंद शाह से सहायता मांगी। अंततः दोनो की संयुक्त सेनाओं ने विद्रोह का दमन किया एवं लुण्डेखां को परतापुर ग्राम के निकट परास्त किया। इस सहायता के बदले नरेन्द्रशाह ने बख्तबुलंद शाह के साथ अपनी बहिन मानकुंवर का विवाह कर दिया एवं उसे वर्तमान सिवनी जिले का विस्तृत क्षेत्र दे दिया।[21]

बख्तबुलंद शाह ने स्थानीय परम्परा के अनुसार अपने रिश्तेदार राजा रामसिंह को छपारा–सिवनी परगना का मुखिया नियुक्त कर दिया। राजा रामसिंह ने ही छपारा का किला बनवाया जो कि वर्तमान में खण्डहर स्वरूप में है।[22] 1742 के लगभग देवगढ़ का साम्राज्य नागपुर के भोंसले शासकों के अधीन हो गया।[23] रघुजी भोंसले ने प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से मोहम्मद खान को छपारा परगने का दीवान नियुक्त कर दिया। मोहम्मद खान के पश्चात क्रमशः माजिद खान तथा मोहम्मद अमीन खान छपारा परगना के दीवान नियुक्त किए गए। मोहम्मद अमीन खान ने पिण्डारियों से सुरक्षा हेतु छपारा परगना का मुख्यालय सिवनी को बनाया। उसने सिवनी में दीवानखाना (दीवान गढ़ी) का निर्माण करवाया।[24] इसके पश्चात सिवनी नगर का महत्व बढ़ गया।

1798 में अमीन खान की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र मोहम्मद जामिन खान दीवान बना। उसके समय में पिण्डारियों ने दो बार छपारा पर लूटपाट की। स्थानीय मान्यता के अनुसार छपारा में पिण्डारियों को इतना अधिक सोना प्राप्त हुआ कि उन्हें किसी अन्य वस्तु को लूटने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई। जामिन खान की अकर्मण्यता और अव्यवस्था के कारण रघुजी भोंसले ने उसे राजधानी नागपुर में बुलवा दिया और उसके स्थान पर बेंगाजी भटोनिया को सिवनी का गवर्नर नियुक्त कर दिया।[25] 1808 में खड़ग भारती गोसाई ने रघुजी भौंसले से तीन लाख रूपये वार्षिक राशि के बदले सिवनी क्षेत्र का प्रबंधन प्राप्त कर लिया। खड़ग भारती ने सिवनी जिले में आदेगांव में एक किला बनवाया था। उसके बारे में कहा जाता है कि उसने अपने कुशासन से कई परगनों को उजाड़ दिया था।[26]

1818 में हुए आंग्ल–मराठा युद्ध के तहत हुए सीताबर्डी के युद्ध में ब्रिटिश सेना विजयी हुई। अंततः दोनो पक्षों में एक संधि हुई जिसके अनुसार भोंसले शासक अप्पा साहब को अपने राज्य का बहुत बड़ा क्षेत्र अंग्रेजों को देना पड़ा। इसके तहत सिवनी क्षेत्र भी ब्रिटिश शासन के अधीन हो गया। सिवनी को सागर और नर्मदा प्रदेश की सीमाओं के अंतर्गत गवर्नर जनरल के एजेंट के शासनाधिकार में रखा गया। 1823 में सिवनी जिले का निर्माण किया गया। 1843 से यहां डिप्टी कमिश्नर की नियुक्ति की जाने लगी। 1853 में राघोजी तृतीय की निःसंतान मृत्यु हो गई। इसके उपरांत तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी ने विलय नीति के अंतर्गत 1854 में नागपुर राज्य को ब्रिटिश साम्राज्य में विलीन कर लिया। 1861 में प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से मध्यप्रांत का गठन किया गया और सिवनी को मध्यप्रांत का एक जिला बना दिया गया।[27] 1932 में ब्रिटिश सत्ता द्वारा प्रशासनिक पुनर्गठन करते हुए सिवनी को छिंदवाड़ा जिले का एक सबडिवीजन बना दिया गया। भारत की स्वतंत्रता के पश्चात राज्य पुनर्गठन के समय 1956 में सिवनी को पुनः जिला बनाया गया।[28]

निष्कर्ष

इस प्रकार सिवनी जिला प्रागैतिहासिक युग से ही जीवन का अस्तित्व बनाए हुए है। सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला में बसा यह जिला अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए विख्यात है। ऐतिहासिक युग में यह जिला नंद, मौर्य, शुंग, सातवाहन, वाकाटक, राष्ट्रकूट एवं कल्चुरी इत्यादि राजवंशों के उत्थान एवं पतन का साक्षी रहा है। मध्यकाल में इसका संबंध गढ़–मण्डला एवं देवगढ़ के गोंड राजवंशों से रहा। मुगल शासक अकबर के समय यह क्षेत्र मुगल शासन के अधीन हो गया, यद्यपि आंतरिक शासन स्थानीय शासकों के पास ही रहा। तत्पश्चात् इस क्षेत्र पर क्रमशः

मराठा एवं ब्रिटिश सत्ता का अधिकार रहा। जबलपुर एवं नागपुर से जीवंत सम्पर्क के कारण इस क्षेत्र ने स्वाधीनता संघर्ष में भी बहुमूल्य योगदान दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात यह जिला अपने विकास के पथ पर निरंतर अग्रसर है।

संदर्भ सूची

1. रसल, आर. व्ही; सेण्ट्रल प्रोविन्स डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, सिवनी डिस्ट्रिक्ट, इलाहाबाद, 1907, पृ. 01।
2. स्ट्रेण्डले, राबर्ट अर्मिटेज; सिवनी कैम्प लाईफ ऑन द सतपुड़ा रेंज, लंदन, 1877, पृ. 143–144।
3. इण्डियन आर्कियोलॉजी, ए रिव्यू, 1959–60, पृ. 25।
4. शर्मा, राजकुमार; मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के पुरातत्त्व का संदर्भ ग्रंथ (पूर्व–मुस्लिमकाल), मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2010, पृ. 148–167।
5. दीक्षित, एम. जी.; मध्यप्रदेश के पुरातत्त्व की रूपरेखा, पुरातत्त्व विभाग, सागर विश्वविद्यालय, 1954, पृ. 42।
6. शर्मा, एस. एन; सिवनी प्राचीन एवं अर्वाचीन, दिवाकर प्रिंटर्स, सिवनी, 1961, पृ. 03।
7. शर्मा, एस. एन; वही।
8. सिंह, उपिन्दर; प्राचीन एवं पूर्वमध्यकालीन भारत का इतिहास, पियर्सन इण्डिया एजुकेशन सर्विसेज प्रा. लि, नोएडा, 2017, पृ. 289।
9. सील, जे. एन.; हिस्ट्री ऑफ द सेण्ट्रल प्रोविन्सेस एण्ड बेरार, कोलकाता, 1917, पृ. 13।
10. शर्मा, एस. एन; वही, पृ. 05।
11. तिवारी, कपिलदेव; छिंदवाड़ा दर्पण, अरूणोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ. 108।
12. शर्मा, राजकुमार; वही, पृ. 280।
13. सिन्हा, ए.एम.; मध्यप्रदेश जिला गजेटियर, बालाघाट, संस्कृति विभाग, भोपाल, 1998, पृ. 48।
14. पाठक, प. जानकी प्रसाद.; सिवनी कल आज और कल, कोणार्क कम्प्यूटर्स, सिवनी, 2004, पृ. 08।
15. माहेश्वरी आर. जी. (सं) ; शुक्ल अभिनंदन ग्रंथ इतिहास खण्ड, नागपुर, 1955, पृ. 40।
16. शर्मा, एस. एन; वही, पृ. 07।
17. विल्स, सी.यू.; सतपुड़ा पर्वतमाला के राजगोंड महाराजा, (अनुवादक– डॉ. सुरेश मिश्र), राधा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2018, पृ. 41–42।
18. रायबहादुर हीरालाल, जबलपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर अथवा जबलपुर ज्योति, 1919, पृ. 27।
19. वही, पृ. 28।
20. पाठक, प. जानकी प्रसाद.; वही, पृ. 08।
21. मिश्र, सुरेश (सं.); मध्यप्रदेश का इतिहास खण्ड–2 मध्यकाल एवं मराठाकाल, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, 2015, पृ. 190।
22. पाठक, प. जानकी प्रसाद.; वही, पृ. 09।
23. ओकटे, मारूतिराव; छिंदवाड़ा क्षितिज – छिंदवाड़ा जिले का भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक एवं राजनैतिक परिवर्तनों का प्रामाणिक वर्णन, हिन्दी प्रचारिणी समिति, छिंदवाड़ा, पृ. 110

24. पाठक, प. जानकी प्रसाद.; वही, पृ. 09।

25. प्रसाद, गोकुल, वही, पृ. 281।

26. पाठक, प. जानकी प्रसाद.; वही, पृ. 09–10।

27. शर्मा, एस. एन; वही, पृ. 12।

28. वही।

****